मनुष्य को ऐसी मीठी, मधुर और सौम्य वाणी बोलनी चाहिए जो स्वयं को भी शांत रखे और दूसरों को भी प्रसन्नता एवं शांति प्रदान करे।

इसका तात्पर्य यह है कि मनुष्य को हमेशा दूसरों की बुराइयाँ नहीं देखनी चाहिए, बल्कि पहले अपने अंदर की कमियों और दोषों को पहचानकर उन्हें सुधारने का प्रयास करना चाहिए।

बोलने से पहले शब्दों का विचार करना चाहिए कि वे किसी को चोट तो नहीं पहुँचाएँगे, या किसी का अपमान तो नहीं करेंगे।

मधुर, सच्ची और उचित वाणी ही मनुष्य को सम्मान दिलाती है।

संतों की संगति हमेशा लाभदायक होती है।
भले ही वे कुछ दें न दें, उनकी वाणी और
विचारों की सुगंध जीवन को श्रेष्ठ बना देती है।